शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन

सविता पाण्डेय
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग
एस0 एस0 पी0जी0 कॉलेज शाहजहॉपुर(उ0प्र0)
डॉ0 रत्ना गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
एस0 एस0 पी0जी0 कॉलेज शाहजहॉपुर (उ0प्र0)

शोध–सार

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 60 शिक्षकों (स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालय के) को सम्मिलित किया गया हैं। शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु क्रमशः एम0 शर्मा तथा एस0 कौर और मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष मे यह पाया गया है कि स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में व्यावसायिक तनाव अधिक तथा कार्य संतुष्टि का स्तर कम है तथा उनके व्यावसायिक तनाव और कार्य संतुष्टि के बीच सामान्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।

संकेत शब्दः–*व्यावसायिक तनाव, कार्य संतुष्टि*

प्रस्तावनाः–

शिक्षा एक जीवन–पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक व्यक्ति कुछ न कुछ सीखता रहता हैं। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वागीण विकास करना है। मानव जीवन में जो कुछ भी अर्जित होता है वह शिक्षा का ही परिणाम है।

जॉन डी0 वी0 के अनुसार ''जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है उस प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का।''

युग पुरूष महात्मा गाँधी के अनुसार–'' शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वागीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।

पेस्टालॉजी के अनुसार– ''शिक्षा, मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील विकास है।''

शिक्षा का आधार शिक्षक है। शिक्षक का किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली में प्रमुख एवं महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षक के अभाव में नियोजित शिक्षा की कल्पना आज भी नही की जा सकती है। शिक्षक समाज की प्राथमिकतांओं पर आधारित पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षार्थी का मार्गदर्शन करता है। महाविद्यालयी शिक्षण की इस औपचारिक व्यवस्था में शिक्षक का स्थान अति महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक का कार्य सदैव केन्द्रीय भूमिकाओं में रहा है, इसलिए इस पर ध्यान भी अधिक जाता है। शिक्षा से जुड़े हुये शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण व्यवस्था की कमियों की पहचान करना व उनके समाधान प्रस्तुत करना है। शिक्षक ही शिक्षा की पूर्ण निर्माण की महत्वपूर्ण कुँजी है।

शिक्षक संघ की कान्फ्रेस के अनुसार– ''अच्छा अध्यापन अच्छे शिक्षकों पर निर्भर करता है, अध्यापकों की गुणात्मक उन्नति करना हमारा लक्ष्य होना चाहिये।''

श्री एम0 सी0 छागला के अनुसार ,–''प्रशिक्षित तथा योग्य शिक्षकों की सहायता के अभाव में कोई भी शिक्षाक्रम उन्नति नही कर सकता है। योग्य शिक्षकों का देश एक उज्जवल भविष्य का देश है।''

मानव एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज में हो रहे तीव्र परिवर्तन ने मानव को भी प्रभावित किया है। आज हम जिस युग में जी रहे है उसमें दिन–प्रतिदिन जटिलताएं बढ़ती जा रही है। शिक्षक भी इन समस्याओं से अछूता नही रह सकता। जिस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में तनााव बढ़ रहा है उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी शिक्षक में तनाव दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे है। तनाव की अधिकता उसकी शिक्षण दक्षता एवं क्षमता को प्रभावित करती है। तनाव की अधिकता के कारण शिक्षक अपना सर्वोत्तम देने में असमर्थ हो जाता है। ये समस्याएं जिन शिक्षकों में पायी जाती है उनमें व्यवसाय के प्रति प्रतिकूल तथा अस्वस्थ्य मनोवृत्ति का विकास हो जाता है।

शिक्षक समाज का वह व्यक्ति होता है। जो छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनने में उनकी मदद करता है। वह सुरक्षा, पहचान नये अनुभव और स्वतंत्रता की इच्छा करता है। जब उसकी यह आवश्यकताएं पूरी नही हो पाती है तो वह तनाव महसूस करने लगता है। जब कोई व्यक्ति अपनी रूचि के हिसाब से व्यवसाय का चुनाव नही कर पाता या उसे अपना मनपसंद व्यवसाय नही मिल पाता है तो उसका कार्य के प्रति लगाव (संतुष्टि) कम होने लगती है वही अगर कोई व्यक्ति अगर अपने रूचि के अनुसार व्यवसाय का चयन करता है या उसे वैसा ही कार्य करने को मिल जाता है तो उसकी कार्य के प्रति संतुष्टि अधिक होती है। कार्य संतुष्टि को उम्र, लिंग, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा का स्तर, कार्य करने की समय सीमा आदि कारक प्रभावित करते है। जब ये सब कारक मन–मुताबिक नही मिल पाता है तो फिर उनका शिक्षण कार्य के प्रति असंतुष्टि पैदा होने लगती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः–वास्तव में अध्यापक ही किसी राष्ट्र के वास्तविक शिल्पकार होते है। मानव जीवन दिन प्रतिदिन व्यस्तता की ओर बढ़ता जा रहा है। व्यस्तता के कारण मानव में तमाम तरह की समस्याऐं उत्पन्न होती है। ये समस्याऐं व्यक्ति में तनाव उत्पन्न करने लगती है। यह तनाव मनुष्य की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या है। मनोवैज्ञानिक तनाव के कारण व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर पड़ जाता है, जब एक शिक्षक इन समस्याओं से ग्रसित होता है तो निश्चित ही शिक्षण प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हो जाता है।

इस सम्बन्ध में हुये कुछ अध्ययनों के परिणाम यह दर्शाते है कि व्यवसायिक तनााव का शिक्षक के कक्षागत व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। **बर्नियूं ने 1982** के अपने शोध में यह परिणाम पाया है कि ''उच्च तनाव में अध्यापक छात्रों की आवश्यकता को प्रभावशाली ढंग से पूरा नही कर पाते है।'' तनाव एवं प्रतिबल के सम्बन्ध में हुये शोध अध्ययन में डॉ0 टी0 सी0 ज्ञानानी (1988) के परिणाम दर्शाते है कि उच्च शिक्षा में संलग्न शिक्षकों के कार्य पर तनाव प्रतिबल का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।''

शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि का महत्वपूर्ण योगदान होता है जहॉ शिक्षक संतुष्टि रहेंगे उसका शिक्षण कार्य अधिक होगा। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अगर हम वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों को देखे तो उनमें कार्यरत शिक्षकों में सतुष्टि का प्रभाव तो देखने को मिलता है, लेकिन अच्छा वेतन सारी सुख सुविधाएं मिलने के बावजूद कभी–कभी महाविद्यालय का वातावरण, प्राचार्य का मानवीय व्यवहार न होना, छात्रों का सहयोग न मिलना, अन्य शिक्षकों से अच्छा सम्बन्ध न होना आदि ऐसे कारक है जिनसे शिक्षकों में कार्य संतुष्टि कम होने लगती है। वही वित्तविहीन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों का वेतन तो कम होता ही है, किसी तरह की सुख–सुविधा भी नही मिलती वेतन इतना कम होता है कि वो अपनी आधारभूत आवश्यकताएं भी ठीक ढंग से पूरी नही कर सकते। जीवन में प्रसन्नता और दृढ़ता के लिए व्यवसायिक कार्य संतुष्टि अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि तो और भी आवश्यक है। शिक्षकों की संतुष्टि व असंतुष्टि का प्रभााव अचेतन रूप से बालकों के मस्तिष्क पर पड़ता है। ऐसा कहा गया है कि ''यथा गुरू तथा शिष्य'' इस सन्दर्भ में **के0 आर0 एस0 आयकर** ने लिखा है कि– ''हमारे ज्ञान व शिक्षण का स्तर

तेजी से नीचे गिर रहा है, इसके अनेक कारणों में से एक कारण अध्यापकों का अपने व्यवसाय के प्रति असंतुष्टि है।

उपरोक्त शोध अध्ययनों के परिणाम के आधार पर निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि तनाव से ग्रंसित कोई भी शिक्षक सुचारू ढंग से कार्य नही कर सकता है साथ ही वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट होना चाहिये। तब जाकर उसका शिक्षण कार्य प्रभावशाली बन पायेगां।

अध्ययन के उद्देश्यः–वर्तमान शोध के परिप्रेक्ष्य में जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है, वे निम्नलिखित है–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के कार्य–संतुष्टि का अध्ययन करना।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँः–प्रस्तुत शोध अध्ययन के निमित्त निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के सन्दर्भ में निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया–

$H_{03\%}$ शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

परिसीमांकनः– प्रस्तुत शोध अध्ययन की समष्टि में केवल लखनऊ शहर के महाविद्यालय सम्मिलित किये गये है।

शोध विधिः–प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरणः–शोध अध्ययन के सन्दर्भ में प्रदन्त संकलन हेतु व्यवसायिक तनाव के मापन के लिए **एम0 शर्मा** तथा **एस0 कौर** द्वारा निर्मित शिक्षकों के **व्यवसायिक तनाव मापनी** तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु **मीरा दीक्षित** द्वारा निर्मित शिक्षकों के **कार्य–संतुष्टि मापन** का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँः–एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत (%) मध्यमान, मानक विचलन तथा सह सम्बन्ध विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन विधिः– प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन दो स्तरों पर किया गया है। प्रथम स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किय गया है तथा द्वितीय स्तर पर चयनित महाविद्यालयों से शिक्षकों का चयन किय गया है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोधकर्तो द्वारा उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में स्थित कुल 62 बी0एड0 महाविद्यालयों में से प्रतिदर्शन की उद्देश्यपूर्ण विधि का प्रयोग कर 6 स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों का चयन किया गया है तत्पश्चात चयनित 6 महाविद्यालयों से आकस्मिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग कर समस्त जनसंख्या से 60 शिक्षकों का चयन किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणमों की व्याख्याः–

अध्ययन की उद्देश्य संख्या–1 ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना'' का सत्यापन व्यावसायिक तनाव मापनी की सहायता से प्रतिशत के माध्यम से किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–1 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–1

व्यावसायिक तनााव मापनी पर प्राप्त शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का मान प्रतिशत के रूप में

व्यावसायिक तनााव	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	65:	30:	15:
शिक्षकों की सं0(N)	33	18	9

परिणाम की व्याख्याः–उपरोक्त तालिका संख्या 1 में व्यावसायिक मापनी पर प्राप्त 60 शिक्षकों जो स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालय से सम्बन्धित है का व्यावसायिक तनाव प्रतिशत के रूप में शोधकर्ता ने प्राप्त किया है। यह परिणाम इंगित करता है कि स्ववित्त पोषित बी0 एड0

महाविद्यालयों में कार्यरत 65: शिक्षकों का व्यावसायिक तनाव उच्च है तथा 30: शिक्षकों का औसत स्तर का व्यावसायिक तनाव है और सिर्फ 15: ऐसे शिक्षक है जिनके व्यावसायिक तनाव निम्न स्तर का प्राप्त हुआ है।

अध्ययन के उद्देश्य संख्या–2 ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना'' का सत्यापन कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग कर प्रतिशत के माध्यम से किया गया है। जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–2 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–2
कार्य संतुष्टि मापनी पर प्राप्त शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का मान प्रतिशत के रूप में

कार्य संतुष्टि	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	13.33%	21.67%	65:
शिक्षकों की सं0(N)	8	13	39

परिणाम की व्याख्याः–उपरोक्त तालिका संख्या–2 में कार्य संतुष्टि मापनी पर प्राप्त 60 शिक्षकों जो स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालय से सम्बन्धित है का कार्य संतुष्टि प्रतिशत के रूप में शोधकर्ता ने प्राप्त किया है। यह परिणाम इंगित करता है कि स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालयों में कार्यरत 13.33%शिक्षकों का कार्य संतुष्टि उच्च है तथा 21.67 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि औसत स्तर की है और 65 ऐसे शिक्षक है जिनको कार्य संतुष्टि निम्न स्तर की प्राप्त हुई है।

अध्ययन के उद्देश्य संख्या–3 ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना'' के अन्तर्गत परिकल्पित परिकल्पना H_{o3}''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।'' का सत्यापन सहसम्बन्ध के माध्यम से किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–3 में दर्शाया गया है।–

तालिका संख्या–3
व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि मापनी पर प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन, तथा सह सम्बन्ध का मान

शिक्षको का मापन	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (D)	सह सम्बन्ध (r)	.05 सार्थकत स्तर df = 58पर निष्कर्ष
व्यावसायिक तनाव	60	95.62	14.66	0.437	सार्थक (अस्वीकृत)
कार्य संतुष्टि	60	226.83	16.72		

परिणाम की व्याख्याः–उपरोक्त तालिका संख्या–3 व्यावसायिक मापनी तथा कार्य संतुष्टि मापनी पर प्राप्त 60 शिक्षको जो स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालय से सम्बन्धित है के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 95.62 तथा 226.83, मानक विचलन क्रमशः 14.66तथा 16.72तथा प्राप्त सहसम्बन्ध का मान 0.437है। प्राप्त सहसम्बन्ध (त) मान स्वतन्त्रता के स्तर df=58पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान 0.25से अधिक है अतः यह प्राप्त मान .05सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः प्रतिपादित परिकल्पना H_{o3} को अस्वीकार किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है। अर्थात स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव तथा कार्यसंतुष्टि के मध्य सामान्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।

निष्कर्षः– शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन पर यह पाया गया कि स्ववित्त पोषित बी0 एड0 महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में व्यावसायिक तनाव अधिक तथा कार्य संतुष्टि का स्तर कम है तथा उनके व्यावसायिक तनाव और

कार्य संतुष्टि के बीच सामान्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।

सन्दर्भ

1. लाल, रमन बिहारी, (2017) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्र सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
2. जमाल, एस0, (2012) माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में व्यवसायिक तनाव का उनकी संगठनात्मक प्रतिबद्धता पर प्रभाव, जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन, दिसम्बर 2011, वाल्यूम–6, नम्बर–2, पृष्ठ संख्या 9–21,
3. गुप्ता, एस0पी0 (2017), अनुसंधान संदर्शिका, सम्प्रत्यय, कार्य विधि एवं प्रविधि, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. सक्सैना, एन0आर0 स्वरूप(2017), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. ओड़ लक्ष्मीलाल के0(2016) शिक्षा के दार्शनिक पृष्ठभूमि, रास्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. सिंह, अरूण कुमार, (2012), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शिक्षा विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. गुप्ता, एस0पी0 (2008), सांयिख्कीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
8. गुप्ता, एस0पी0 (2008), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
9. लॉउरा, जी एंड0 बेल सी0 (2008) अप्रोचेस टू इ वैलुयेअिंग टीचर इफेक्टिवनेस, वायिंगटन नेशनल सेंटर फार टीचर क्वालिटी।
10. सिंह, अरूण कुमार (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना।
11. राय, पारसनाथ(2010), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
12. तिवारी, बजरंग बली, ''माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मध्य व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन'' शोध प्रबन्ध, छात्रपति शहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2015।
13. खान, मोहम्मद इरशाद, प्राथमिक विद्यालयों के गैर सरकारी एवं शिक्षक–शिक्षकाओं के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मूक अध्ययन'', लघुशोध प्रबन्ध, हण्डिया पी0जी0 कालेज, हण्डिया, इलाहाबाद, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2016।
14. Report of the Educational Commision (1964) Government of India ministry of Education, Education and National Development, Manager of Publivation Delhi